छत्रशाल बावनी

आचार्य सेवकेन्द्र त्रिपाठी

स्वतन्त्र प्रकाशन संस्थान

सेवक सदन, झाँसी

प्रकाशक: –

राजाराम तिवारी

एम. ए. एल. टी. (हिन्दी-विशेषज्ञ)

प्रधानाचार्य

बरुवा सागर (झांसी)

मुखपृष्ठ सज्जा:—

वीरेन्द्र कुमार पुरोहित

प्रभाचित्र शाला, झांसी

सर्वाधिकार लेखकाधीन

संवत् २०२६

मूल्य ३.५०

मुद्रक:—

रघुनन्दन मिश्र

बुन्देलखण्ड प्रेस

खत्रयाना, झांसी

मताभिमत

सम्पादकाचार्य श्रीयुत बनारसीदास जी चतुर्वेदी

ब्रजभाषाचार्य श्री सेवकेन्द्र जी त्रिपाठी की रचनाओं का मैं सन् १९३५ से ही प्रशंसक रहा हूं, जब उन्होंने ओरछा में स्वर्गीय महाराज वीरसिंह जू देव को अपनी अनेक कविताएं सुनाई थी। नई दिल्ली में भी उनकी कितनी ही रचनाएं सुनने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था।

ब्रजभाषा जीवित भाषा है और आज भी उसके बोलने वालों की संख्या लाखों ही होगी। श्री सेवकेन्द्रजी एवं चतुर्वेदी जी को बढ़ाने में अग्रगण्य है। उनका नवीन पुस्तक "छत्रसाल-बावनी" को प्रतीक्षा मैं उत्सुकता से कर रहा हूं।

फीरोजाबाद (आगरा)
३१-४-६९

बनारसीदास चतुर्वेदी

छत्रसाल बावनी के रचयिता श्री सेवकेन्द्र त्रिपाठी

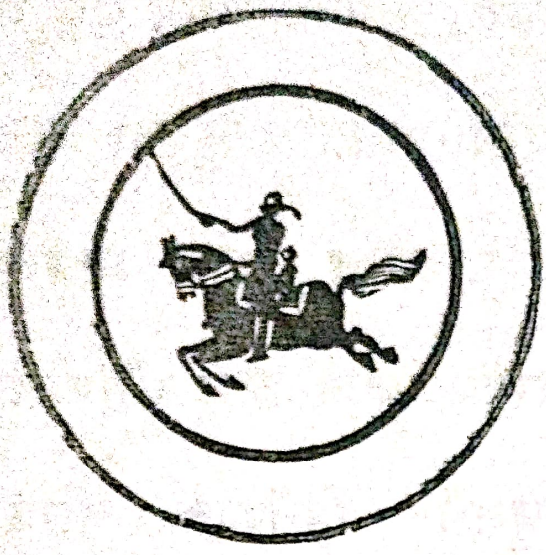

छप्पय

साहस शक्ति समेंट, भारती चन्द भूप सम,
मधुकर शाह समान भक्ति कौ गह्यौ कार्य-क्रम।
न्याय पंथ नृप चोर सिंह सौ, पावन पाल्यौ,
सत् चरित्र हरदौल तुल्य नित सत पथ चाल्यौ।
धर्म अंध अवरंग कौ उन्मद मद मर्दन कियौ,
छत्रशाल छितिपाल सो, अमर सुयश जग में जियौ।

आचार्य सेवकेन्द्र त्रिपाठी

आचार्य सेवकेन्द्र त्रिपाठी प्रणीत

अनुपम काव्य ग्रन्थमाला

१—व्रज-वर्तिका (प्रकाशित)
२—मीरा–मानस
३—ताज की आवाज
४—शांति के सपूत
५—बुन्देल–विभूति
६—श्रद्धा–सुमन
७— विकास–वीणा

—: प्रेस में :—

साधना के स्वर

(खड़ी बोली का काव्य संग्रह)

स्वतन्त्र प्रकाशन संस्थान, सेवक सदन, झांसी।